ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

सदा याद रखें

लेखक : स. जसबीर सिंघ

क्रांतिकारी गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़
Website : www.sikhworld.info

नोटः यहां दी गई सारी जानकारी लेखक के अपने निजी विचार हैं। यह जरूरी नहीं कि सभी लेखक के विचारों से सहमत हों।

सदा याद रखें

सिख न केवल एक अकाल पुरख का नाम ही सिमरण है जो सब को पैदा करने, पालन पोषण करने तथा मारने के समर्थ है। गुरु ग्रंथ साहिब के अतिरिक्त किसी अन्य देहधारी को गुरु नहीं मानना और न ही किसी को प्रणाम (मत्था टेकना) करना है। सिख ने अमृत वेले (तड़के) उठ कर स्नान के बाद वाहिगुरु का स्मरण करना है और फिर गुरबाणी का पाठ (नितनेम) करना है। गुरबाणी का पाठ करते समय जल्दी नहीं करनी चाहिये । प्यार सत्कार सहित, मन को टिका कर, समझ विचार कर शुद्ध करना चाहिये।

गुरुसिख को रोज़ाना गुरुद्वारे जाकर कीर्तन कथा श्रवण करके अपने जीवन को सफल बनाना है। सिख के लिये धार्मिक स्थान केवल गुरुद्वारा ही है अन्य कोई नहीं। सिखों ने आपस में मिलते समय 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतेह ही बुलानी है।

गुरबाणी की पोथियों, गुटकों आदि को रुमाल में लपेट कर सत्कार सहित रखना है और जूठे हाथ नहीं लगाने चाहिये।

सिख ने अपना नाम 'सिघ' या 'कौर' शब्द सहित लिखना है। नाम के साथ जाति गोत नहीं लिखना। सिख धर्म में नाम सिमरण को ही सच्चा तीर्थ माना गया है। और तीर्थ यात्रा या तीर्थ स्नान की सिख अपने बहुमूल्य विरासत को जान सकें। सिख ने कुश्तियों तथा दूसरी खेलों में हिस्सा लेना है मगर गंदी फ़िलमें और नाटक, जिनमें गंदे सीन दिखाए जाते हैं, उनसे दूर रहना है। सिख ने कभी भी किसी किस्म का नशा (शराब, भंग, तम्बाकू, सिग्रेट, स्मैक) आदि नहीं करना।

सिख लड़कियों ने नाक कान का छेदना तथा छेदक गहनों को प्रयोग नही करना क्योंकि सिख रहित मर्यादा अनुसार मना है। सिख स्त्रियों के लिए घुंघट निकालना सिख धर्म में मनाह है। सिख पुरुष तथा स्त्री के लिए नंगे सिर बाज़ारों में घूमना तथा नंगे सिर रहना मनाह है। केशों के सत्कार के लिये हर समय दस्तार या चुन्नी से केश ढाँपकर रखने है। सिख स्त्रियों ने किसी किस्म का कोई व्रत नहीं रखना । करवा चौथ, अमावस, पूर्णमासी, आदि व्रत नहीं रखने, निरोल मनमति है।

सिख कभी श्राद्ध नहीं करते और न ही श्रादों में हिस्सा लेना है। सिख के लिये सारे दिन शुभ हैं। अच्छे-बुरे दिनों का विचार नहीं करना। संग्राद, अमावस, पूणवासी आदि दिन कोई खास पवित्र नहीं बल्कि बाकी दिनों जैसे ही हैं।

गुरमिख ने कभी किसी पंडित या ज्योतिषी पर विश्वास नहीं करना और न ही राशि फल के चक्कर में पड़ना है। जन्म समय जन्म-कुण्डली नहीं बनवानी और शादी के लिए साहा मूर्हत नहीं निकलवाना।

सिख ने मूर्ति पूजा नहीं करनी। फोटो या मूर्ति को हार नहीं चढ़ाना, धूप देना सिख रहित मर्यादा अनुसार मनाह है। गुरु साहिब की प्रचलित तस्वीरें भी असल तस्वीरे नहीं है और न ही गुरु साहिब की फोटो तस्वीरे या मूर्ति ही बनवानी चाहिये।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पीढ़े को मुठियां भरना, दीवारों या थड़ो पर नाक रगड़ना या मंजी साहिब के नीचे पानी (जल) रखना मनमति है।

किसी मनुष्य का सतिगुरु के प्रकाश समय संगत में गदेला या कुर्सी पर बैठना मनमति है।

कीर्तन करते समय गुरबाणी से बाहर की मनघंड़त और फालूत पंक्तियां लगा कर धारण (लय) लगाना मनमति है।

संगत में एक समय एक ही क्रार्यक्रम होना चाहिए, अर्थात् कथा या कीर्तन या पाठ। अखंड पाठ या सहज पाठ के साथ उसी स्थान पर कथा, कीर्तन या लैक्चर नहीं होना चाहिए।

अखंड पाठ या सहज पाठ स्वयं करना चाहिए। यदि खुद न कर सको तो किसी समझदार पाठी (ग्रंथी) से करवा सकते हो, मगर खुद पाठी के पास बैठकर पाठ सुनना चाहिए। ऐसा न हो कि पाठी अकेला पाठ करता रहे और पाठ रखवाने वाले घरेलू कामों में लगे रहे। ऐसे पाठ का कोई लाभ नहीं । खाली कर्म काण्ड है।

कड़ाह प्रशाद और लंगर खाने के समय जल्दी नहीं करनी चाहिये।

संगत में कड़ाह प्रशाद बांटने से पहले पांच प्यारों का हिस्सा निकाल कर बाँटना चाहिए। फिर प्रशाद श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सेवा में बैठे हुए सिंघ के लिये कटोरी में डाल कर देना चाहिए ताकि वह सेवा मुक्त होने पर खा सके। फिर संगत मे बांटना चाहिए।

अरदास होने के वक्त संगत के सारे स्त्री-पुरुष हाथ जोड़ कर खड़े होने ज़रूरी है।

गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी (हुक्म) को मानना ही गुरु ग्रंथ साहिब जी का पूर्ण सत्कार है।

सिख के लिये हुक्म है कि प्रत्येक कार्य को आरम्भ (शुरू) करने से पूर्व वाहिगुरु के सम्मुख अरदास करें।

कंठ करने के लिये शब्द